

1. व्यावहारिक हिंदी का परिचय (Introduction to Practical Hindi)

. परिभाषा और अर्थ:

- "व्यावहारिक" शब्द "व्यवहार" और "इक" प्रत्यय के योग से बना एक विशेषण है, जिसका अर्थ है **"व्यवहार में प्रयुक्त"**।
- किसी भी भाषा का वह रूप जो जनसामान्य द्वारा अपने दैनिक जीवन में विभिन्न कार्यों और विशेष उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे ही **व्यावहारिक हिंदी** कहा जा सकता है।
- व्यावहारिक हिंदी का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितनी स्वयं हिंदी है।
- इसमें जनजीवन का **सजीव और सच्चा चित्रण** मिलता है, जो लोगों द्वारा देखे गए और व्यक्त किए गए से उत्पन्न होता है।
- यह भावनाओं की सरल, सहज और स्पष्ट अभिव्यक्ति को दर्शाता है।
- व्यावहारिक हिंदी किसी विशेष व्यक्ति द्वारा व्यक्त नहीं होती;
परंपरा और परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- समाज में प्रयोग होने पर यह कभी-कभी **व्याकरणिक नियमों को तोड़ती भी है**। भाषा का प्रयोग समाज के विविध पक्षों द्वारा किया जाता है।

. अन्य नाम और परिप्रेक्ष्य:

- व्यावहारिक हिंदी को **कामकाज हिंदी, प्रकार्यात्मक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी** भी कहा जाता है।

- यह केवल रोज़मर्रा के जीवन में प्रयोग होने वाली हिंदी ही नहीं, बल्कि **किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा भी है।**
 - विद्वान 'व्यावहारिक हिंदी' की अपेक्षा 'कामकाजी' या 'प्रयोजनमूलक हिंदी' शब्द का प्रयोग अधिक उचित मानते हैं।
 - डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा एक ही होती है, परंतु **शब्दावली और संरचना की दृष्टि से दोनों अलग हो जाती हैं।** व्यावहारिक हिंदी में विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, जबकि सामान्य भाषा में अनौपचारिकता का भाव होता है।
 - वैज्ञानिक, पत्रकार, डॉक्टर और व्यापारी अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित हिंदी भाषा के विशिष्ट स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक या व्यावहारिक हिंदी मानते हैं।
- **व्यावहारिक हिंदी का विकास:**
- व्यावहारिक हिंदी में **"प्रयोजन के आधार पर" विशेषण का प्रयोग मूलतः नया है।**
 - वाणिज्य एवं व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी पहले से ही देश की संपर्क भाषा बनी हुई थी।

- 19वीं शताब्दी में पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संपर्क तथा शिक्षा में आधुनिकता के प्रसार के परिणामस्वरूप हिंदी को **नवीन प्रयोग क्षेत्रों से गुज़रना पड़ा।**
- इसके नए प्रयोग बढ़ते गए, और नवीन क्षेत्रों के अनुरूप व्यावहारिक हिंदी का रूप भी समय के अनुसार परिवर्तित, परिवर्धित एवं विकसित होता चला गया।
- **सामाजिक परिप्रेक्ष्य और विषमता:**
 - सामाजिक दृष्टि से, भाषा में विभिन्न संदर्भों, स्थितियों और कार्यों के आधार पर कई रूप उभरने लगे, जिससे वह अपने प्रयोग से **विषम-रूपी बनती चली जाती है।**
 - उदाहरण के लिए, रेलगाड़ी, बस या धार्मिक स्थलों में व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग किया जाता है, जहाँ व्यक्ति इसे वाक्यों और अपनी सूझ-बूझ से समझ लेता है (जैसे: "मोटर भर गई है")।

2. हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में (Hindi as a Link Language)

- **परिभाषा:**
 - संपर्क भाषा से अभिप्राय उस भाषा से है, जो समाज के विभिन्न वर्गों या भाषा-भाषियों के बीच **सेतु के रूप में काम आती है।**
 - डॉ. महेंद्र सिंह राणा के अनुसार, यह वह सुविधाजनक विशिष्ट भाषा है जिसके माध्यम से दो व्यक्ति, दो प्रदेश, राज्य और केंद्र तथा दो

देश परस्पर विरोधी भाषाओं की उपस्थिति के बावजूद संपर्क स्थापित कर पाते हैं।

• **विशेषताएँ और प्रयोग:**

- स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर जन सामान्य की संपर्क भाषा की मुख्य विशेषता उसकी **बोलचाल की प्रयुक्ति तथा सरलता** होती है। यह आमतौर पर पारिभाषिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली से बोझिल नहीं होती।
- प्रशासनिक स्तर पर भी **राजभाषा का प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में** किया जाता है, जिसमें व्याकरण के सभी नियमों का पालन संभव होता है।
- हिंदी **स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही भारत की संपर्क भाषा** के रूप में स्वीकृति पाती चली गई।
- जब लोग बस, रेलगाड़ी, समुद्री या हवाई-यात्रा में होते हैं और अपनी भाषा में संपर्क नहीं कर पाते, तो वे **अंग्रेजी या हिंदी से अपना काम चलाते हैं**।
- भारत की **अधिकांश जनता ने हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपना लिया है**।
- एक सर्वेक्षण के आधार पर देखा गया है कि भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसे भारत के अधिक से अधिक लोग अपने विभिन्न दैनिक कार्यों, मनोरंजन, सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक तथा

साहित्यिक उद्देश्यों से आदान-प्रदान और परस्पर संपर्क के लिए प्रयोग करते हैं।

- सार रूप में, संपर्क भाषा वह भाषा है, जो विभिन्न व्यक्तियों, राज्यों एवं देशों को जोड़ने का कार्य करती है। यह देश के विभिन्न क्षेत्रीय और स्थानीय साहित्य-कलाओं और विभिन्न संस्कृतियों को व्यक्त करने का माध्यम बनती है और लोग उसे मन से स्वीकार करते हैं।

• संवैधानिक समर्थन:

- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश** दिया गया है तथा उसके प्रचार-प्रसार के रूप में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में बढ़ाने पर बल दिया गया है।
- यह अनुच्छेद संघ का कर्तव्य बताता है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना, हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए **मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण** करते हुए, उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

3. राजभाषा प्रावधान (Official Language Provisions)

• **संवैधानिक मान्यता:**

- हिंदी को संविधान के **अनुच्छेद 343 में 14 सितंबर, 1949 को संघ की राजभाषा** के रूप में स्वीकार किया गया।
- भारतीय संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 में 'संघ की राजभाषा' संबंधी प्रावधान दिए गए हैं।
- **अनुच्छेद 343(1) के तहत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है।** प्रयोग किए जाने वाले अंकों के स्वरूप भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप हैं।
- अनुच्छेद 343(2) के अनुसार 15 वर्षों (26 जनवरी, 1965) तक सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का यथावत् प्रयोग होता रहेगा।
- अनुच्छेद 343(3) में संसद को 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् भी अंग्रेजी के प्रयोग को यथावत् रखने का विधि द्वारा उपबंध करने की शक्ति दी गई है।
- अनुच्छेद 344 राष्ट्रपति को संविधान के प्रथम पाँच वर्ष तथा दस वर्ष पश्चात् राजभाषा आयोग नियुक्त करने का आदेश देता है।
- अनुच्छेद 345 राज्यों की राजभाषा/राजभाषाओं का उल्लेख करता है।

• **राजभाषा अधिनियम और नियम:**

- **राजभाषा अधिनियम 1963 में पारित किया गया, जिसकी धारा 3(3) बहुत महत्वपूर्ण है।**

- इसके अनुसार कार्यालयों से नोटिस, करार, संविदाएँ, टेंडर, संकल्प, परिपत्र एवं सामान्य आदेश आदि कागजात अनिवार्य रूप से द्विभाषी जारी होने चाहिए।
- राजभाषा अधिनियम 1963 को वर्ष 1967 में संशोधित किया गया।
- राजभाषा अधिनियम की धारा 8 के अधीन वर्ष 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए, जिसके अनुसार पूरे भारत को भाषाई दृष्टि से **तीन** क्षेत्रों 'क', 'ख', 'ग' में बांटा गया है।
 - 'क' क्षेत्र (हिंदी भाषी राज्य): बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली और संघ शासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह।
 - 'ख' क्षेत्र (हिंदी प्रयोग वाले राज्य): गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब एवं संघ शासित राज्य क्षेत्र चंडीगढ़।
 - 'ग' क्षेत्र (अहिंदी भाषी राज्य): तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, केरल, मणिपुर, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, गोवा एवं अन्य शेष राज्य।
- राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 एवं 7 में प्रावधान किया गया है कि कार्यालयों द्वारा हिंदी में प्राप्त हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में ही देना है।

- नियम 8(4) के अनुसार हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी को हिंदी में कार्य करने हेतु आदेश द्वारा विनिर्दिष्ट किया जा सकता है।
- नियम 10(4) के अंतर्गत जिन कार्यालयों के 90 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो जाता है, उन्हें भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित कर दिया जाता है।
- नियम 12 के अनुसार कार्यालय-प्रधान का दायित्व है कि वह अपने कार्यालय में राजभाषा आदेशों का अनुपालन करे, और प्रशासनिक प्रधान जानबूझकर अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई कर सकते हैं।
- **संसदीय राजभाषा समिति:**
 - राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के अंतर्गत **1976 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन** किया गया।
 - इस समिति के अध्यक्ष **केंद्रीय गृहमंत्री** होते हैं।
 - इस समिति की तीन उप-समितियाँ हैं और इसमें कुल **तीस सदस्य** होते हैं (बीस लोकसभा से और दस राज्यसभा से)।
 - **तीसरी उप-समिति बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के निरीक्षण का कार्य** कर रही है।

4. व्यावहारिक हिंदी के विविध रूप और उनका प्रयोग (Various Forms of Practical Hindi and Their Usage)

व्यावहारिक हिंदी कई प्रमुख रूपों में प्रकट होती है, जो विभिन्न क्षेत्रों और उद्देश्यों के अनुकूल होते हैं। इनमें शामिल हैं:

• **वाणिज्यिक और व्यापारिक हिंदी:**

- मध्यकाल से लेकर आज तक व्यापार, व्यवसाय, आयात-निर्यात और वाणिज्य में सैकड़ों वर्षों से इसका प्रयोग होता आ रहा है।
- स्वतंत्रता के बाद इसके प्रयोग में धीरे-धीरे वृद्धि हुई, और सरकार ने नए वाणिज्य पाठ्यक्रम शुरू किए, जिनमें हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।
- इस शिक्षा को व्यावहारिक और जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए इसे भारतीय समाज और संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए।
- इसमें निश्चित पारिभाषिक शब्दावली एवं शैली का प्रयोग किया जाता है (जैसे, "चांदी उछली, सोना लुढ़का")।
- आधुनिक विज्ञापन में हिंदी का प्रयोग तेज़ी से बढ़ रहा है, और बैंक भी भारतीय बाज़ार और वित्त व्यवस्था पर अधिकार पाने के लिए जनता की भाषा में काम करने के महत्व को समझते हैं।

• **वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी:**

- विज्ञान के विविध क्षेत्रों (भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान, चिकित्सा, कंप्यूटर, यांत्रिकी) में प्रयुक्त हिंदी को संदर्भित करता है।
- इसका व्यापक प्रयोग देश के अधिकांश कार्यों को सुविधापूर्ण और जनहित में कर सकता है।

- वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य पुस्तकों, शोध-पत्रों, विश्वकोशों और जनसंचार माध्यमों में उपलब्ध है।
- इस जानकारी को आम आदमी तक पहुँचाने के लिए उसे सरल और बोधगम्य भाषा में रखने का प्रयास किया जाता है।
- हिंदी में भी वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के कोश उपलब्ध हैं।

• विधिक हिंदी:

- **"लॉ या कानून" की हिंदी** है, जिसका प्रयोग जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में कानूनी प्रक्रियाओं के दौरान होता है।
- स्वतंत्रता के बाद **1970 में पहली बार विधिक शब्दावली तैयार की गई।**
- राजभाषा के रूप में हिंदी की स्थापना के बाद, इसका विकास विधि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु अन्य क्षेत्रों में भी तीव्र गति से हुआ।

• कार्यालयी हिंदी:

- सरकारी, गैर सरकारी या निजी कार्यालयों के **औपचारिक लिखित कामकाज की भाषा।**
- यह हिंदी का रूप स्वतंत्रता के बाद, 14 सितंबर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के बाद विकसित हुआ।

- इसकी अपनी **पारिभाषिक शब्दावली, पद रचना और वाक्य विन्यास** है।
- हिंदी भाषी प्रदेशों ('क' क्षेत्र) में, बैंकों में कार्यालय आदेश, प्रेस विज्ञप्तियाँ, सूचना, करार, लाइसेंस, परमिट, लेखन सामग्री, पासबुक, चेक-बुक और तिमाही/छमाही बैंक रिपोर्ट आदि सभी हिंदी में ही होनी चाहिए।
- **बैंकों में हिंदी का प्रयोग:**
 - आधुनिक परिवेश में बैंक से संबंधित अनेक कार्य राजभाषा हिंदी में हो रहे हैं।
 - पर्याप्त शब्द-भंडार और हिंदी अधिकारी, अनुवादक, आशुलिपिक तथा टंकणकर्ता भी उपलब्ध हैं।
 - हालांकि, कठिनाइयाँ भी हैं, जैसे अधिकारियों की वाणिज्य/अर्थशास्त्र और हिंदी/अंग्रेजी दोनों पर समान पकड़ न होना।
 - **निवारणों में शामिल हैं:** विषय की जानकारी तथा दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले अधिकारियों का चयन, गहन प्रशिक्षण कार्यशालाएँ चलाना, हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार देना, हिंदी पुस्तकालय की स्थापना, और यह समझना कि देश की 70% जनता जो गाँव में रहती है, उनके लिए स्थानीय भाषा या हिंदी ही सर्वाधिक उपयुक्त है, अंग्रेजी नहीं।

- हिंदी में बैंकिंग शब्दावली का ज्ञान वित्तीय समझ और प्रबंधन कौशल में वृद्धि करता है।
- स्रोत में व्यापक **बैंकिंग शब्दावली** को वर्गीकृत किया गया है:
 - **खाता संबंधी:** सेविंग अकाउंट, करेंट अकाउंट, फिक्स्ड डिपॉजिट, रिकरिंग डिपॉजिट, मंथली इनकम स्कीम, पेंशन स्कीम, स्टूडेंट सेविंग्स अकाउंट, सैलरी अकाउंट, वेल्थ बैंकिंग, लाइफ इंश्योरेंस।
 - **लेन-देन संबंधी:** एनईएफटी (NEFT), आरटीजीएस (RTGS), आईएमपीएस (IMPS), चेक, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, एनएफएस (NFS), एटीएम (ATM), मोबाइल बैंकिंग, इनवाइसिंग।
 - **ऋण संबंधी:** होम लोन, व्हीकल लोन, एजुकेशन लोन, बिजनेस लोन, पर्सनल लोन, एग्रीकल्चरल लोन, लोन फैसिलिटी, कॉर्पोरेट लोन, सेल्फ-एम्प्लॉयमेंट लोन, हेल्थ लोन।
 - **बैंकिंग संचालन संबंधी:** केवाईसी (KYC), सीआरएस (CRS), एटीएम (ATM), डिजिटल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, बैंक चार्जज, बैंक स्टेटमेंट, रेमिटेंस सर्विस, एसीएच (ACH)।
- **सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग:**

- अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, बाज़ार, मॉल और मंडी जैसे सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग **दैनिक व्यापार, सूचना आदान-प्रदान और सामाजिक अंतःक्रिया को आसान बनाने** के लिए अद्वितीय रूप से होता है।
- यह **सांस्कृतिक सेतु और सामाजिक समावेशन का माध्यम** बनती है, जहाँ आधिकारिक भाषा और स्थानीय बोलियों का मेल होता है।
- **अस्पताल में:** हिंदी जनता की बीमारियों और स्वास्थ्य सेवाओं संबंधी सूचनाओं का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह रोगियों को अपनी मातृभाषा में अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को समझने और समाधान प्राप्त करने में मदद करती है।
- **बाज़ार में:** हिंदी विभिन्न तरह के लोगों के साथ संवाद स्थापित करने में सहायक है और विभिन्न वर्गों को समृद्धि और सामाजिक एकता में बांधती है।
- **मॉल में:** हिंदी का प्रयोग विभिन्न भाषाओं के लोगों के बीच एकता का साधन है, जहाँ व्यापारिक संवाद, ग्राहक सेवा और स्थानीय विपणन सहज होता है।
- **मंडी में:** अनाज, सब्जियों और फलों के क्रय-विक्रय केंद्र में हिंदी एक महत्वपूर्ण और सामाजिक रूप से प्रचलित भाषा है, जो ग्राहकों,

खुदरा व्यापारियों और उपभोक्ताओं के बीच संवाद को आसान बनाती है।

• **हिंदी के क्षेत्रीय प्रकार (Regional Variants of Hindi):**

- **बमबइया हिंदी:** मुख्यतः महाराष्ट्र में बोली जाती है और इसका प्रयोग **हिंदी फिल्मों में** अधिक देखने को मिलता है। आरंभ में इसे बदमाशों, गुंडों और निम्न लोगों की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता था। इसमें 'अपुन', 'तेरे को', 'मेरे को', 'खोपचा', 'कायको' जैसे शब्द प्रचलित हैं।
- **कलकतिया हिंदी:** मूलतः कोलकाता में प्रयोग होती है, जिस पर बंगाली और भोजपुरी, मैथिली जैसी स्थानीय बोलियों का प्रभाव है। यह सामान्य बोलचाल, व्यापार और बाज़ार की भाषा बन गई है।
- **हैदराबादी हिंदी:** आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में बोली जाती है। यह दक्खिनी, मराठी और तेलुगू के मिलन से बनी है, और उर्दू का भी प्रचलन रहा है। यह बाज़ार और व्यापार की बोलचाल की भाषा के रूप में देखी जा सकती है। इसमें तेलुगू का असर भी दिखाई पड़ता है, जैसे 'मुझे चाहिए' के लिए 'मेरे को होना' का प्रयोग।

5. अनुभव लेखन (Experience Writing)

• **महत्व:**

- अनुभव लेखन व्यक्ति के **विचार, भावनाओं और अनुभूतियों को दूसरों के साथ साझा करने का एक अच्छा माध्यम है।**
- यह अनुभवों को सही तरीके से दर्ज करने और भावनाओं को ऐसी भाषा में व्यक्त करने में मदद करता है जिसे पाठक आसानी से समझ सकें।
- यह सामाजिक और साहित्यिक रूप से स्वयं को व्यक्त करने का एक शानदार तरीका है, जो भावनाओं और विचारों को आसानी से साझा करने में सहायक है।
- यह संक्षिप्त बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिससे **मजबूत संबंध बनते हैं** और संवेदनशीलता तथा वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।
- **अच्छे अनुभव लेखन की विशेषताएँ:**
 - भावनाओं को **सहज भाषा में प्रस्तुत करें।**
 - अनुभवों की गहराइयों में जाकर उन्हें सरल शब्दों में बदलें ताकि पाठक सीधे संवेदनशीलता का अनुभव कर सकें।
 - अनुभवों का **विस्तारपूर्वक और सुव्यवस्थित रूप से वर्णन करें।**
 - भाषा **रुचिपूर्ण और अभिव्यक्तिपूर्ण** होनी चाहिए, और साझा करने का उत्साह बना रहना चाहिए।
- **अनुभव लेखन के उदाहरण:**

- **बाजार दौरे का अनुभव (पन्ना):** मध्य प्रदेश के पन्ना के चौक बाजार के दौरे का वर्णन, जहाँ हीरे, वीर और मंदिर प्रसिद्ध हैं। लेखक ने बाजार की हलचल, किराने का सामान खरीदना, मोबाइल की स्क्रीन गार्ड बदलना, एक प्रसिद्ध रेस्तरां में भोजन करना, और "बृजवासी की लस्सी" का स्वाद लेना जैसे अनुभव साझा किए।
- **दर्शनीय स्थल भ्रमण का अनुभव (खजुराहो):** खजुराहो की यात्रा का वृत्तांत, जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि का केंद्र है। इसमें 10वीं शताब्दी के शानदार मंदिरों (जैसे लक्ष्मण मंदिर, कंदारिया महादेव मंदिर) की स्थापत्य कला और सौंदर्य का वर्णन है। यात्रा में चित्रकारिता-ऋत झील, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम और रानी दुर्गावती स्मारक जैसे अन्य स्थल भी शामिल थे।
- **क्रिकेट मैच देखने का अनुभव (वर्ल्ड कप 2023 फाइनल, भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया):** अहमदाबाद में आयोजित फाइनल मैच के उत्साह का वर्णन। इसमें भारत के बल्लेबाजी संघर्ष, ऑस्ट्रेलिया के शुरुआती विकेट और **ट्रेविस हेड के शतक तथा मार्नस लाबुशेन के साथ उनकी साझेदारी** पर प्रकाश डाला गया है जिसने ऑस्ट्रेलिया को जीत दिलाई। इस मैच ने क्रिकेट की भावना और खेल के प्रति जुनून को प्रदर्शित किया।

6. कार्यालयी शब्दावली (Office Terminology)

• **महत्व:**

- कार्यालयी हिंदी शब्दावली किसी संगठन या कार्यालय के **संचार, प्रबंधन और पेशेवरता को सुनिश्चित करने के लिए आधार** प्रदान करती है।
- यह **सटीकता और सुगमता को बढ़ावा देती है**, संगठनात्मक गतिविधियों में सुधार करती है और जानकारी के वितरण को आसान बनाती है।
- यह कर्मचारियों के बीच संबंधों को मजबूत करने, चर्चाओं में सहायता करने, व्यावसायिक समझौतों को सुरक्षित करने और समग्र संगठनात्मक संबंधों को बेहतर बनाने में मदद करती है, जिससे सहयोग, विश्वास और समर्थन की भावना बढ़ती है।

• **कार्यालयी शब्दावली की श्रेणियाँ:**

- **प्रशासनिक शब्दावली:** संगठन का प्रबंधन और निर्देशन, नियमों और आदेशों का पालन सुनिश्चित करना (जैसे, ऑफिस हेड, ऑर्डर, सर्कुलर, रिपोर्ट, कॉन्ट्रैक्ट, मैनेजमेंट, डिसिप्लिन, सपोर्ट, एक्सपीरियेंस, कोऑपरेशन)।
- **प्रशिक्षण संबंधी शब्दावली:** कौशल सिखाने और सीखने की प्रक्रिया से संबंधित शब्द (जैसे, ट्रेनिंग, इंस्ट्रक्टर, स्टैंडर्ड, लर्नर, डेवलपमेंट, एक्क्रेडिटेशन, करिकुलम, मॉडर्नाइजेशन, एक्सीलेंस, रिसर्च)।

- **तकनीकी शब्दावली:** संगठन में तकनीकी क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के बीच संवाद को सुगम बनाने वाले शब्द (जैसे, बायोमेट्रिक्स, आईओटी, क्रिप्टोकॉरेसी, रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), न्यूरेल नेटवर्क, क्वांटम कंप्यूटिंग, ब्लॉकचेन, वायरल वीडियो, ऑगमेंटेड रियलिटी (AR))।
- **प्रशासनिक संचार संबंधी शब्दावली:** संचार और प्रबंधन क्षेत्र की विशिष्टता को कानूनी रूप से व्यक्त करने वाले शब्द, प्रभावी और सुगम संचार सुनिश्चित करना (जैसे, कम्युनिकेशन, टेक्निकल कम्युनिकेशन, न्यूज़लेटर, डेवलपमेंट प्रोग्राम, टीम बिल्डिंग, ट्रेनिंग सेशन, सेमिनार, डायलॉग, परफॉरमेंस अप्रेजल, क्रिएटिव थिंकिंग, प्रॉब्लम सॉल्विंग)।
- **कार्यक्रमों के आयोजन संबंधी शब्दावली:** विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में सूचित करने वाले शब्द (जैसे, इवेंट, सेलिब्रेशन, फेस्टिवल, कॉन्फ्रेंस, वर्कशॉप, एग्जीबिशन, परमानेंट, इनांगरेशन सेरेमनी, डिस्कशन)।
- **मीडिया संबंधी शब्दावली:** समाचार, जानकारी, विचार और मनोरंजन को व्यक्त करने और पहुँचाने के लिए उपयोग होने वाले शब्द (जैसे, न्यूज़, टीवी चैनल, जर्नलिज्म, ऑनलाइन मीडिया, सोशल मीडिया, प्रेजेंटेशन, एडवरटाइजिंग, मीडिया पर्सनालिटी, ब्रॉडकास्टिंग, मैगज़ीन)।

- **मानव संसाधन संबंधी शब्दावली:** संगठन के कर्मचारियों के बीच संवाद सुनिश्चित करने वाले शब्द, मानव संसाधन प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना (जैसे, जॉब डिस्क्रिप्शन, रिक्रूटमेंट, एम्प्लॉयी कम्पेनसेशन, डेडीकेशन, डिसिप्लिन, प्रोफेशनल डेवलपमेंट, एक्सीलेंस, प्रॉस्पेक्टिटी, कमिटमेंट, मोटिवेशन)।
- **वित्तीय शब्दावली:** वित्तीय प्रबंधन में व्यक्तियों को वित्तीय शब्दों को समझने में मदद करने वाले शब्द, संगठन की आर्थिक स्थिति को निर्देशित करना (जैसे, बजट, अकाउंट्स, फाइनेंशियल ईयर, ऑडिट, लोन, एक्विजिशन, इन्वेस्टमेंट, रिज़र्व, अकाउंट्स पेएबल, नेट प्रॉफिट)।

इस व्यापक शब्दावली का अध्ययन छात्रों, पेशेवरों और आम जनता को जटिल बैंकिंग और कार्यालय के परिदृश्यों को समझने, वित्तीय साक्षरता और प्रशासनिक कुशलता बढ़ाने में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए है।